॥ ॐ दुर्गायै नमः ॥

श्री दुर्गा चालीसा

पूर्ण पाठ • सरल हिंदी अर्थ • फ्री PDF 2026

VH Original · vhoriginal.com

नवरात्रि, दुर्गाष्टमी और रोज़ के पाठ के लिए। इस PDF में पूरा चालीसा और हर चौपाई का सरल अर्थ है।

पाठ कैसे करें

स्नान के बाद स्वच्छ आसन पर बैठें। माँ दुर्गा का ध्यान करें। ॐ दुर्गायै नमः बोलकर चालीसा आरंभ करें। एक बैठक में पूरा पाठ करें। समय कम हो तो शुरुआत की पंक्तियों से संकल्प लेकर बाद में पूरा पढ़ें।

लाभ — मान्यता

भक्त मानते हैं कि नियमित पाठ से मन स्थिर रहता है, भय कम होता है और घर में शांति रहती है। यह आस्था का विषय है, चिकित्सा या कानूनी वादा नहीं।

॥ श्री दुर्गा चालीसा ॥

दोहा / चौपाई • सरल अर्थ

1. नमो नमो दुर्गे सुख करनी। नमो नमो अंबे दुःख हरनी॥

हे माँ दुर्गा, आपको बार-बार प्रणाम। आप सुख देती हैं और दुख हरती हैं।

---

2. निरंकार है ज्योति तुम्हारी। तिहूँ लोक फैली उजियारी॥

आपकी ज्योति निराकार है और तीनों लोकों में उजाला फैलाती है।

---

3. शशि ललाट मुख महाविशाला। नेत्र लाल भृकुटि विकराला॥

माथे पर चंद्र, विशाल मुख, लाल नेत्र और भयंकर भौंहें — माँ का तेज रूप।

---

4. रूप मातु को अधिक सुहावे। दरश करत जन अति सुख पावे॥

माँ का रूप अत्यंत सुंदर है। दर्शन मात्र से भक्त को सुख मिलता है।

---

5. तुम संसार शक्ति लय कीना। पालन हेतु अन्न धन दीना॥

संसार की शक्ति आपसे है। अन्न और धन देकर आप जगत का पालन करती हैं।

---

6. अन्नपूर्णा हुई जग पाला। तुम ही आदि सुन्दरी बाला॥

अन्नपूर्णा बनकर आपने जगत पाला। आप ही आदि सुंदरी हैं।

ये जानकारी हिंदू कैलेंडर और पुराणों दंत कथाओं से ली गई है, वेब साइट की जिम्मेदारी नहीं है ।

7. प्रलयकाल सब नाशन हारी। तुम गौरी शिवशंकर प्यारी॥

प्रलय में संहार भी आप करती हैं। आप गौरी हैं, शिव की प्यारी।

---

8. शिव योगी तुम्हरे गुण गावें। ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित ध्यावें॥

शिव और योगी आपके गुण गाते हैं। ब्रह्मा और विष्णु नित्य आपका ध्यान करते हैं।

---

9. रूप सरस्वती को तुम धारा। दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन उबारा॥

सरस्वती रूप धरकर आपने ऋषि-मुनियों को सुबुद्धि दी।

---

10. धरयो रूप नरसिंह को अम्बा। परगट भई फाड़कर खम्बा॥

नरसिंह रूप में खंभे को फाड़कर आप प्रकट हुईं।

---

11. रक्षा करि प्रह्लाद बचायो। हिरण्याक्ष को स्वर्ग पठायो॥

प्रह्लाद की रक्षा की और अत्याचारी को अंत दिया — पारंपरिक कथा का स्मरण।

---

12. लक्ष्मी रूप धरो जग माहीं। श्री नारायण अंग समाहीं॥

लक्ष्मी रूप में आप नारायण के साथ जगत में विराजमान हैं।

---

13. क्षीरसिन्धु में करत विलासा। दयासिन्धु दीजै मन आसा॥

क्षीरसागर में आपकी लीला है। दया की नदी बनकर मन को आस दें।

---

14. हिंगलाज में तुम्हीं भवानी। महिमा अमित न जात बखानी॥

हिंगलाज में आप भवानी हैं। महिमा इतनी है कि पूरी कही नहीं जा सकती।

---

15. मातंगी अरु धूमावति माता। भुवनेश्वरी बगला सुख दाता॥

मातंगी, धूमावती, भुवनेश्वरी, बगलामुखि — ये रूप भी आप ही हैं।

---

16. श्री भैरव तारा जग तारिणी। छिन्न भाल भव दुःख निवारिणी॥

तारा और छिन्नमस्ता रूप में आप जगत तारती और भव-दुख हरती हैं।

---

17. केहरि वाहन सोह भवानी। लांगुर वीर चलत अगवानी॥

सिंह वाहन पर सोहती भवानी, आगे वीर अगवानी करते हैं।

---

18. कर में खप्पर खड्ग विराजै। जाको देख काल डर भाजै॥

हाथ में खप्पर और तलवार। यह रूप देखकर काल भी डर जाता है।

---

19. सोहै अस्त्र और त्रिशूला। जाते उठत शत्रु हिय शूला॥

अस्त्र और त्रिशूल शोभा देते हैं। शत्रु के हृदय में शूल उठता है।

---

20. नगरकोट में तुम्हीं विराजत। तिहुँ लोक में डंका बाजत॥

नगरकोट में आप विराजती हैं। तीनों लोकों में आपका डंका बजता है।

---

21. शुंभ निशुंभ दानव तुम मारे। रक्तबीज शंखन संहारे॥

शुंभ-निशुंभ मारे, रक्तबीज का संहार किया।

22. महिषासुर नृप अति अभिमानी। जेहि अघ भार मही अकुलानी॥

अभिमानी महिषासुर के पाप से पृथ्वी व्याकुल हो उठी थी।

23. रूप कराल कालिका धारा। सेन सहित तुम तिहि संहारा॥

कालिका का कराल रूप धरकर सेना सहित उसका संहार किया।

24. परी गाढ़ संतन पर जब जब। भई सहाय मातु तुम तब तब॥

संतों पर जब-जब विपत्ति आई, माँ तब-तब सहायक बनीं।

25. अमरपुरी अरु बासव लोका। तब महिमा सब रहें अशोका॥

देवलोक तक आपकी महिमा से सभी निश्चिंत रहते हैं।

26. ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी। तुम्हें सदा पूजें नर-नारी॥

ज्वाला में आपकी ज्योति है। नर-नारी सदा आपका पूजन करते हैं।

27. प्रेम भक्ति से जो यश गावें। दुख दारिद्र निकट नहिं आवें॥

प्रेम से यश गाने वाले के पास दुख और दरिद्र नहीं टिकते।

28. ध्यावे तुम्हें जो नर मन लाई। जन्म-मरण ताकौ छुटि जाई॥

एक मन से ध्यान करने वाले का जन्म-मरण का बंधन छूटता है — यह श्रद्धा का वचन है।

29. जोगी सुर मुनि कहत पुकारी। योग न हो बिन शक्ति तुम्हारी॥

योगी और मुनि कहते हैं — आपकी शक्ति बिना योग सिद्ध नहीं होता।

30. शंकर आचारज तप कीनो। काम अरु क्रोध जीति सब लीनो॥

आचार्य शंकर ने तप किया, काम-क्रोध जीते।

31. निशिदिन ध्यान धरो शंकर को। काहु काल नहिं सुमिरो तुमको॥

रात-दिन शिव का ध्यान किया, शक्ति को याद नहीं किया।

32. शक्ति रूप का मरम न पायो। शक्ति गई तब मन पछितायो॥

शक्ति का मर्म न समझे तो शक्ति चली गई और मन पछताया।

33. शरणागत हुई कीर्ति बखानी। जय जय जय जगदम्ब भवानी॥

शरण में आकर कीर्ति गाई — जय जगदंबा भवानी।

34. भई प्रसन्न आदि जगदम्बा। दई शक्ति नहिं कीन विलम्बा॥

आदि जगदंबा प्रसन्न हुईं और बिना देर शक्ति लौटा दी।

35. मोको मातु कष्ट अति घेरो। तुम बिन कौन हरै दुख मेरो॥

हे माँ, कष्ट घेरे हैं। आपके बिना मेरा दुख कौन हरे?

---

36. आशा तृष्णा निपट सतावें। रिपू मुरख मोही डरपावे॥

आशा-तृष्णा सताती हैं, शत्रु और मूर्ख डर देते हैं।

---

37. शत्रु नाश कीजै महारानी। सुमिरौं इकचित तुम्हें भवानी॥

हे महारानी, विघ्न का नाश कीजिए। एक चित्त से आपको स्मरण करता हूँ।

---

38. करो कृपा हे मातु दयाला। ऋद्धि-सिद्धि दै करहु निहाला॥

हे दयालु माँ, कृपा करो। ऋद्धि-सिद्धि देकर कृतार्थ करो।

---

39. जब लगि जिऊँ दया फल पाऊँ। तुम्हरो यश मैं सदा सुनाऊँ॥

जब तक जीऊँ, दया का फल पाऊँ और आपका यश सुनाऊँ।

---

40. दुर्गा चालीसा जो कोई गावै। सब सुख भोग परमपद पावै॥

जो दुर्गा चालीसा गाता है, लोक-सुख के साथ परम पद की कामना पूरी होती है — ऐसी मान्यता है।

---

41. देवीदास शरण निज जानी। करहु कृपा जगदम्ब भवानी॥

देवीदास को अपनी शरण जानकर, हे जगदंबा, कृपा कीजिए।

॥ इति श्री दुर्गा चालीसा सम्पूर्ण ॥

स्रोत और सीमा

पाठ पारंपरिक लोक-प्रचलित दुर्गा चालीसा पर आधारित है। अर्थ सरल हिंदी में VH Original ने लिखा है। अलग-अलग पंचांग और क्षेत्रीय प्रतियों में एक-आध शब्द बदल सकते हैं।

ये जानकारी हिंदू कैलेंडर और पुराणों दंत कथाओं से ली गई है, वेब साइट की जिम्मेदारी नहीं है।